**ये कैसी उलझन है**

खाव्ब हमारे ज़हन में कुछ ऐसे सवार है

हमें आज कहना है उनसे कुछ बार बार है

लेकिन दिल है की धाडस जुटा नहीं पाता

अपना दिल-ऐ-हाल उनसे बता नहीं पाता

देखते है जब उन्हें हम अपने ख़्वाबों में

तिनके सा निकल जाता है वक़्त उनकी मीठी यादों में

सोचते है हम कब होगी पूरी हमारी आशा

यादें ही रह जाती है अंत में बस छोड़ जाती है निराशा

मिलेगी कभी न कभी बनके हमारा साथी

जैसे मिलते है अंधकार में दिया और बाती

मुरझाये फूल सी मुस्कान रहती है मन में समाई

बस इंतज़ार है उनका नहीं सही जाती ये जुदाई

सुनहरे बादलों में जब पड़ती है गाज

हमारे दिल में प्यार की बजती है साज़

समां लेते है उनकी हर मुस्कान को बनके दिल की आवाज़

विचलित मन से करते है तमन्ना लिए होटों पे फ़रियाद

गम होते है इस तरह, की कुछ ख्याल ही नहीं रहता

मन में ख्वाहिशें होती है हजारों सवाल नहीं रहता

ये कैसी उलझन है जो दिल बेचैन कर जाती है

पत्थर में भी गुलाब उगने का खवाब दिखा जाती है

मन में पीड़ा होती है और सुकून नहीं मिलता

अंजुमन में रहते है हम मगर जूनून नहीं मिलता

दिल रह्कता है सवाल दफ़्न अनंत अन्धकार में

जवाब ढूड रहे है हम सारे, अपने प्यार की तलाश में

किशोर पाठक